भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 1361
गुरुवार, 30 जुलाई, 2026 को उत्तर देने के लिए

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता

1361. श्री रणदीप सिंह सुरजेवालाः

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) वर्ष 2021 से अब तक अंतरिक्ष विभाग और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन को वर्ष-वार कुल कितना बजट आवंटित किया गया है, जिसमें भारत के सकल घरेलू उत्पाद और केंद्रीय बजट में उनके हिस्से को दर्शाया गया हो;

(ख) प्रक्षेपण यानों, सैटेलाइट विकास, मानव अंतरिक्ष उड़ान, ग्रहों की खोज, व्यावसायिक मिशनों, अनुसंधान एवं विकास और अन्य प्रमुख घटकों पर किए गए खर्च का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या सरकार ने प्रक्षेपण क्षमता, सैटेलाइट निर्माण, दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्रक्षेपण तकनीक, मानव अंतरिक्ष उड़ान, गहरे अंतरिक्ष की खोज, व्यावसायिक प्रक्षेपण सेवाओं, पेटेंट, अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को लेकर अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की वैश्विक स्थिति का कोई आकलन किया है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

****

(क) वर्ष 2021 से अब तक अंतरिक्ष विभाग को आवंटित वर्ष-वार कुल बजट, जिसमें भारत के सकल घरेलू उत्पाद और केंद्रीय बजट में इसकी हिस्सेदारी दर्शायी गई है, निम्नानुसार है:

(करोड़ रुपये में)

वर्ष	विभाग को आवंटित बजट	केंद्रीय बजट में विभागीय बजट की % हिस्सेदारी	भारत के जीडीपी में विभागीय व्यय की % हिस्सेदारी
2025-26	13416.20	0.26	0.03
2024-25	13042.75	0.27	0.04
2023-24	12543.91	0.28	0.04
2022-23	13700.00	0.35	0.04
2021-22	13949.09	0.40	0.05

(ख) विभिन्न योजनाओं/क्षेत्रों के अंतर्गत किए गए खर्च का विवरण निम्नानुसार है:

योजना का नाम	व्यय का प्रकृति	कुल व्यय करोड़ रुपये में					
		2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26 (रा.व्य.)	2026-27 (ब.अनु.)
अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी	प्रक्षेपण यानों, भू-प्रेक्षण उपग्रहों, नौवहन और प्रौद्योगिकी प्रदर्शक उपग्रहों के निर्माण तथा सुविधाओं के सृजन पर व्यय।	8873.62	7646.72	8083.43	8840.72	9601.98	10397.06
अंतरिक्ष अनुप्रयोग	एनएनआरएमएस, डीएमएस आदि जैसे अनुप्रयोग संबंधी कार्यक्रमों पर व्यय।	1203.62	1268.56	1475.43	1562.91	1596.27	1725.06
अंतरिक्ष विज्ञान	ग्रह-संबंधी मिशन, प्रायोजित अनुसंधान आदि पर व्यय।	190.36	114.13	109.51	107.93	184.62	569.76
भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली	संचार उपग्रहों के निर्माण पर व्यय	344.97	414.18	234.74	176.13	205.95	130.93

(ग) जी हाँ। विभाग ने प्रक्षेपण क्षमता, सैटेलाइट निर्माण, दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्रक्षेपण तकनीक, मानव अंतरिक्ष उड़ान, गहरे अंतरिक्ष की खोज, व्यावसायिक प्रक्षेपण सेवाओं, पेटेंट, अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को लेकर अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की वैश्विक स्थिति का आकलन किया है। इसका सारांश निम्नानुसार है:

- <u>प्रक्षेपण क्षमता:</u> भारत ने सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से 100 प्रक्षेपण करने की ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त की है और पीएसएलवी, जीएसएलवी तथा एलवीएम3 के माध्यम से स्वयं को वैश्विक स्तर पर एक विश्वसनीय प्रक्षेपण सेवा प्रदाता के तौर पर स्थापित किया है, जिसमें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के लिए विशेष वाणिज्यिक मिशन भी शामिल हैं।
- <u>सैटेलाइट निर्माण एवं प्रक्षेपण सेवाएँ:</u> भारत ने जीएसएलवी के माध्यम से नासा-इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार (निसार) मिशन को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया, एलवीएम3 का उपयोग करके भारतीय धरती से अब तक के सबसे भारी उपग्रह को जीटीओ (सीएमएस-03) में प्रक्षेपित किया और तत्पश्चात एक अमेरिकी ग्राहक के लिए भारत से अब तक का सबसे भारी वाणिज्यिक उपग्रह प्रक्षेपित किया।
- <u>दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्रक्षेपण तकनीक एवं भविष्य की प्रक्षेपण प्रणालियाँ</u>: इसरो लागत को कम करने और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता के संवर्धन हेतु

दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्रक्षेपण यान (आरएलवी) प्रौद्योगिकी, चरण पुनः प्राप्ति, सेमी-क्रायोजेनिक नोदन, अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यान (एनजीएलवी) और एलओएक्स-मीथेन नोदन प्रणालियों पर आगे काम कर रहा है।

- <u>मानव अंतरिक्ष उड़ान</u>: गगनयान कार्यक्रम के माध्यम से भारत एक मानव अंतरिक्ष उड़ान वाला राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिसमें अंतरिक्ष विज़न 2047 के अंतर्गत मानव अनुकूलित प्रक्षेपण प्रणालियां, कर्मीदल मॉड्यूल प्रौद्योगिकियां और भविष्य के भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का विकास शामिल है।
- <u>गहरे अंतरिक्ष की खोज:</u> भारत चंद्रयान-3 के माध्यम से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफलतापूर्वक सहज अवतरण करने वाला पहला देश बना और आदित्य-एल1 मिशन के माध्यम से सूर्य-पृथ्वी एल1 बिन्दु पर सौर वेधशाला स्थापित करने वाला तीसरा देश बना।
- <u>उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियाँ:</u> स्पैडेक्स मिशन के माध्यम से अंतरिक्ष में स्वचालित डॉकिंग और अनडॉकिंग का प्रदर्शन करने वाला भारत चौथा देश बना जो भविष्य के अंतरिक्ष स्टेशनों, मानव अंतरिक्ष उड़ानों और गहरे अंतरिक्ष की खोज के लिए एक महत्वपूर्ण क्षमता है।
- <u>अनुसंधान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी</u>: इसरो दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्रक्षेपण प्रणालियों, अंतरिक्ष रोबोटिक्स, विद्युत नोदन, क्वांटम संचार, डॉकिंग प्रौद्योगिकियों, ग्रहीय अन्वेषण और अगली पीढ़ी की उपग्रह प्रणालियों में उन्नत अनुसंधान एवं विकास कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाते हुए, स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास और बौद्धिक संपदा के सृजन को भी सुदृढ़ कर रहा है।
- <u>व्यावसायिक प्रक्षेपण सेवा और अंतरिक्ष क्षेत्र संबंधी सुधार:</u> सरकार के सुधारों द्वारा इन-स्पेस एवं एनसिल के माध्यम से निजी क्षेत्रों की प्रतिभागिता के लिए अंतरिक्ष क्षेत्र के दरवाज़े खुलने के साथ प्रक्षेपण सेवाओं का व्यावसायीकरण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और वैश्विक बाजार में भारत की भागीदारी को सुदृढ़ करने में सहायता मिली है।

  भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप्स, यथा- स्काईरूट एयरोस्पेस का विक्रम-एस, भारत का पहला निजी रूप से विकसित विक्रम-1 को कक्षा तक जाने वाला रॉकेट; अग्निकुल कॉसमॉस का अग्निबाण एसओआरटीईडी मिशन, जिसमें एकल 3डी-प्रिंटेड इंजन का इस्तेमाल किया गया है; और पिक्सेल द्वारा उच्च विभेदन अति वर्णक्रमीय उपग्रह समूह की तैनाती जैसे मिशनों ने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त करने के साथ ही व्यावसायिक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में भारत की वैश्विक उपस्थिति को सुदृढ़ किया है।

प्रक्षेपण क्षमता, सैटेलाइट विकास, वैज्ञानिक मिशन, व्यावसायिक प्रक्षेपण, निजी क्षेत्र की भागीदारी और उन्नत प्रौद्योगिकी विकास में निरंतर उपलब्धियों के माध्यम से भारत वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी सुदृढ़ और निरंतर बढ़ती उपस्थिति के साथ विश्व के अग्रणी अंतरिक्ष-उन्मुखी राष्ट्रों में से एक राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आया है।

****